ग़ज़ल 16

-रविशंकर श्रीवास्तव

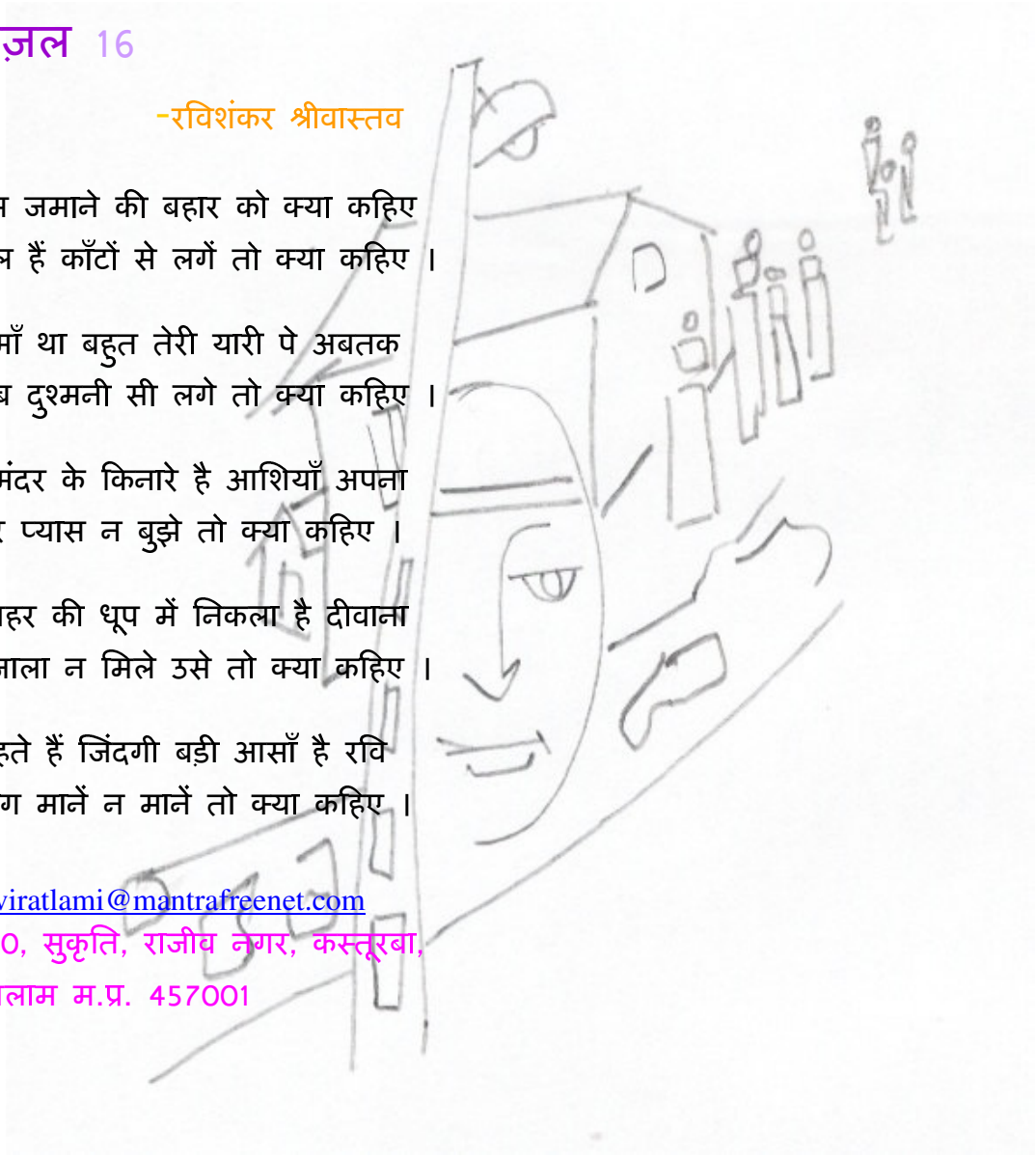

इस जमाने की बहार को क्या कहिए
गुल हैं काँटों से लगें तो क्या कहिए ।

गुमाँ था बहुत तेरी यारी पे अबतक
अब दुश्मनी सी लगे तो क्या कहिए ।

समंदर के किनारे है आशियाँ अपना
गर प्यास न बुझे तो क्या कहिए ।

दुपहर की धूप में निकला है दीवाना
उजाला न मिले उसे तो क्या कहिए ।

कहते हैं जिंदगी बड़ी आसाँ है रवि
लोग मानें न मानें तो क्या कहिए ।

raviratlami@mantrafreenet.com
100, सुकृति, राजीव नगर, कस्तूरबा,
रतलाम म.प्र. 457001